Aarti Anthology

******

आरती कुसुमावली

www.astrologyfutureeye.com

Aarti Anthology
आरती कुसुमावली

***

Copyright © 2014 astrologyfutureeye.com

***

Disclaimer

All contents are intended for information purposes and should be presented accordingly. While every effort has been used to ensure the accuracy of the information contained in the book, The publisher astrologyfutureeye.com does not assume liability or responsibility for any errors or omissions in this book. Astrologyfutureeye.com does not accept responsibility for any loss as a result of reliance upon the accuracy of information. Do not use while operating a motor vechile or heavy equipment.

All Rights Reserved - Visit Astrologyfutureeye.com

***

Content List

- What is Aarti and how to do ?
- Ganesh Aarti - 1
- Ganesh Aarti - 2
- Ganesh Aarti - Marathi
- Shiva Aarti
- Mahadev Aarti
- Bhairav Aarti
- Hanuman Aarti
- Mehandipur Balaji Aarti
- Vishnu Aarti
- Narshiha Aarti
- Krishna Aarti
- Khatu Shyamji Aarti
- Shri Ram Aarti - 1
- Shri Ram Aarti - 2
- Satyanarayan Aarti
- Sai baba Aarti
- Jagdamba Aarti
- Durga Aarti
- Vaishno Devi Aarti
- Kaali Aarti
- Lakshmi Aarti
- Saraswati Aarti
- Gayatri Aarti
- Parvati Aarti
- Vindveshwari Devi Aarti
- Gangaji Aarti
- Tulsi Aarti
- Suryadev Aarti
- Shanidev Aarti
- Aadinath Bhagwan Aarti
- Parasvanath Aarti - 1

- Parasvanath Aarti - 2
- Mahaveer Swami Aarti - 1
- Mahaveer Swami Aarti - 2
- Mahaveer Swami Aarti - 3
- Padmavati Mata Aarti
- Nakoda Bhairav Aarti
- Panch Parmeshthi Aarti
- Rajendra Suri Aarti
- Jin Kushal Suri Aarti
- Jin Aarti
- Mangal Dipak Aarti

What is aarti
how to do aarti?

आरती को संस्कृत में नीराजन कहा जाता हैं, पुजन एवं आराधना में जो त्रुटि रह जाती हैं, आरती कर के उस त्रुटि का समापन किया जाता हैं। यथार्थ में, आरती द्वारा प्रभु का स्तवन किया जाता हैं। आरती का एक और अर्थ भी लिया जाता हैं, की आरती द्वारा भक्त अपने प्रभु के अरिष्टों का शमन करता हैं। आरती करने एवं देखने का पुण्य असीमित होता हैं। आरती करने एवं आरती में भाग लेने वाले व्यक्ति का अपनी सात पीढ़ियों समेत उद्धार होता हैं।

साधारणत:, आरती के पांच अंग होते हैं, पर पञ्च प्रदीप द्वारा भी आरती की जा सकती हैं, आरती के दीपक विषम संख्या में रखे जाते हैं, जैसे एक, तीन, पांच या ग्यारह आदि। आरती के पांच अंग हैं - प्रथम दीपक के द्वारा, दूसरी जलयुक्त शंख से, तीसरी धुले हुए वस्त्र से, चौथी आम और पीपल के पत्तों से और पाँचवी साष्टांग दण्डवत् एवं प्रदक्षिणा से आरती करे। आरती के समय धूप किया जाता हैं, और शंख, ढोल, नगाड़े बजाये जाते हैं।

आरती कैसे की जाती हैं
आरती उतारते समय, प्रभु के चरण कमल में चार बार, दो बार कटी प्रदेश की तरफ, एक बार मुख मंडल की तरफ और सात बार समस्त अंगो की तरफ आरती घुमाई जाती हैं।

***

Ganesh Aarti

गणेश आरती (1)

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा,
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा,
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।
एकदन्त दयावन्त चारभुजाधारी,
माथे पर तिलक सोहे, मूसे की सवारी।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा,
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।
पान चढ़े, फूल चढ़े, और चढ़े मेवा,
लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा,
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।
अँधे को आँख देत, कोढ़िन को काया,
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा,
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।
सूर श्याम शरण आए, सफल कीजे सेवा,
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा,
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।
दीनन की लाज राखो, शम्भु सुतवारी,
कामना को पूर्ण करो, जग बलिहारी।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा,
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।

***

Ganesh Aarti

गणेश आरती (2)

शेदुर लाल चढायो, अच्छो गजमुखको,
दोंदिल लाल बिराजे, सुत गौरीहरको।
हाथ लिये गुडलड्डू, साईं सुरवरको,
महिमा कहे न जाय, लागत हूं पदको।
जयजयजी गणराज, विद्यासुखदाता,
धन्य तुम्हारा दर्शन, मेरा मन रमता।
अष्टो सिद्धि दासी, संकट को बैरी,
विघ्नविनाशन मंगल मूरत अधिकारी।
कोटी सुरज प्रकाश, एसी छबि तेरी,
गंडस्थलमदमस्तक झूले शशिबिहारी।
भावभगतसे कोई शरणागत आवे,
संतत संपत सबही भरपूर पावे।
एसें तुम महाराज, मोको अति भावे,
गोसावीनंदन निशिदिन गुण गावे।
जय जयजी गणराज विद्यासुखदाता।

***

Ganesh Aarti
गणेश आरती (Marathi)

सुखकर्ता दु:खहर्ता वार्ता विघ्नाची,
नुरवी पुरवी प्रेम कृपा जयाची,
सर्वांगी सुंदर उटि शेंदूराची,
कंठी शोभे माळ मुक्ताफलांची।
जय देव, जय देव, जय मंगलमूरति,
दर्शानामाथ्रे मन:कामना पुरती,
जय देव, जय देव।
रत्नखचित फरा तुज गौरीकुमरा,
चंदनाची उटि कुमकुम केशरा,
हीरेजडित मुकुट शोभतो बरा,
रुन्झुन्ति नूपुरे, चरनी घागरिया।
जय देव, जय देव, जय मंगलमूरति,
दर्शानामाथ्रे मन:कामना पुरती,
जय देव, जय देव।
लंबोदर, पीताम्बर, फनिवरबंधना,
सरल सोंड, वक्रतुंड त्रिनयना,
दास रामाचा, वाट पाहे सादना,
संकटी पावावे, निर्वाणी रक्षावे, सुखरवंदना।
जय देव, जय देव, जय मंगलमूरति,
दर्शानामाथ्रे मन:कामना पुरती,
जय देव, जय देव।

***

Shiva Aarti

शिव आरती

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा।
ॐ जय शिव ओंकारा...
एकानन चतुरानन पञ्चानन राजे,
हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन साजे।
ॐ जय शिव ओंकारा...
दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहे,
त्रिगुण रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे।
ॐ जय शिव ओंकारा...
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी,
चन्दन मृगमद चंदा, भोले शुभकारी।
ॐ जय शिव ओंकारा...
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे,
सनकादिक गरुणादिक भूतादिक संगे।
ॐ जय शिव ओंकारा...
कर के मध्य कमण्डलु चक्र त्रिशूलधारी,
सुखकारी दुखहारी जगपालन कारी।
ॐ जय शिव ओंकारा...
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका,
प्रणवाक्षर दोउ मध्ये ये तीनो एका।
ॐ जय शिव ओंकारा...
ॐ जय शिव ओंकारा...
लक्ष्मी व सावित्री पार्वती संगा,
पार्वती अर्द्धांगी, शिवलहरी गंगा।
ॐ जय शिव ओंकारा...
पर्वत सोहैं पार्वती, शंकर कैलासा,
भांग धतूर का भोजन, भस्मी में वासा।
ॐ जय शिव ओंकारा...
जटा में गंग बहत है, गल मुण्डन माला,
शेष नाग लिपटावत, ओढ़त मृगछाला।
ॐ जय शिव ओंकारा...
काशी में विराजे विश्वनाथ, नन्दी ब्रह्मचारी,
नित उठ दर्शन पावत, महिमा अति भारी।
ॐ जय शिव ओंकारा...
त्रिगुणस्वामी जी की आरती जो कोइ नर गावे,
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवान्छित फल पावे।
ॐ जय शिव ओंकारा, शिव पार्वती प्यारा,
शिव गल रुण्डनं माला, शिव बैल चढनवाला,
शिव भूरी जटावाला, शिव ऊपर जलधारा,
जटा में गंग विराजत, मस्तक पे चन्द्र विराजत,
ओढ़त मृगछाला, पिवत भंग प्याला,
रहवत मतवाला, ॐ जय शिव ओंकारा...
ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा

ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा।
ॐ जय शिव ओंकारा...

***

Mahadev Aarti

महादेव आरती

हर हर हर महादेव
सत्य, सनातन, सुन्दर, शिव सबके स्वामी।
अविकारी अविनाशी, अज अन्तर्यामी।
हर हर हर महादेव
आदि, अनन्त, अनामय, अकल, कलाधारी।
अमल, अरूप, अगोचर, अविचल, अघहारी।
हर हर हर महादेव
ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर तुम त्रिमूर्तिधारी।
कर्ता, भर्ता, धर्ता, तुम ही संहारी।
हर हर हर महादेव
रक्षक, भक्षक, प्रेरक, प्रिय औढरदानी।
साक्षी, परम अकर्ता, कर्ता अभिमानी।
हर हर हर महादेव
मणिमय-भवन निवासी, अति भोगी रागी।
सदा श्मशान विहारी, योगी वैरागी।
हर हर हर महादेव
छाल-कपाल, गरल-गल, मुण्डमाल व्याली।
चिता भस्मतन त्रिनयन, अयनमहाकाली।
हर हर हर महादेव
प्रेत-पिशाच-सुसेवित, पीत जटाधारी।
विवसन विकट रूपधर, रुद्र प्रलयकारी।
हर हर हर महादेव
शुभ्र-सौम्य, सुरसरिधर, शशिधर, सुखकारी।
अतिकमनीय, शान्तिकर, शिवमुनि मन-हारी।
हर हर हर महादेव
निर्गुण, सगुण, निरञ्जन, जगमय नित्य प्रभो।
कालरूप केवल हर कालातीत विभो।
हर हर हर महादेव
सत्, चित्, आनन्द, रसमय, करुणामय धाता।
प्रेम-सुधा-निधि प्रियतम, अखिल विश्व त्राता।
हर हर हर महादेव
हम अतिदीन, दयामय चरण-शरण दीजै।
सब विधि निर्मल मति कर, अपना कर लीजै।
हर हर हर महादेव

***

Bhairav Aarti

भैरव आरती

जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा,
जय काली और गौरा देवी कृत सेवा।
जय भैरव...
तुम्हीं पाप उद्धारक दुःख सिन्धु तारक,
भक्तों के सुख कारक भीषण वपु धारक।
जय भैरव...
वाहन श्वान विराजत कर त्रिशूल धारी,
महिमा अमित तुम्हारी जय जय भयहारी।
जय भैरव...
तुम बिन देवा सेवा सफल नहीं होवे,
चौमुख दीपक दर्शन दुःख खोवे।
जय भैरव...
तेल चटकि दधि मिश्रित भाषावलि तेरी,
कृपा करिये भैरव करिए नहीं देरी।
जय भैरव...
पांव घुंघरु बाजत अरु डमरु जमकावत,
बटुकनाथ बन बालकजन मन हरषावत।
जय भैरव...
बटकुनाथ की आरती जो कोई नर गावे,
कहे धरणीधर नर मनवांछित फल पावे।
जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा,
जय काली और गौरा देवी कृत सेवा।

***

Hanuman Aarti

हनुमान आरती

आरती कीजै हनुमान लला की,
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गिरिवर कांपे,
रोग दोष जाके निकट न झांके।
अंजनि पुत्र महा बलदाई,
सन्तन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीरा रघुनाथ पठाए,
लंका जारि सिया सुधि लाए।
लंका सो कोट समुद्र-सी खाई,
जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारि असुर संहारे,
सियारामजी के काज सवारे।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे,
आनि संजीवन प्राण उबारे।
पैठि पाताल तोरि जम-कारे,
अहिरावण की भुजा उखारे।
बाएं भुजा असुरदल मारे,
दाहिने भुजा संतजन तारे।
सुर नर मुनि आरती उतारें,
जय जय जय हनुमान उचारें।
कंचन थार कपूर लौ छाई,
आरती करत अंजना माई।
जो हनुमानजी की आरती गावे,
बसि बैकुण्ठ परम पद पावे।
आरती कीजै हनुमान लला की,
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।

***

Mehandipur Balaji Aarti

मेहंदीपुर बालाजी आरती

जय हनुमत वीरा, स्वामी जय हनुमत वीरा,
संकट मोचन स्वामी, तुम हो रणधीरा।
जय हनुमत..
पवन-पुत्र अंजनी-सुत, महिमा अति भारी,
दुःख दारिद्रय मिटाओ, संकट भय हारी
जय हनुमत..
बाल समय में तुमने, रवि को भक्ष लियो,
देवन स्तुति कीन्हीं, तुरतहिं छोड़ दियो।
जय हनुमत..
कपि सुग्रीव राम संग, मैत्री करवाई,
अभिमानी बलि मेट्यो, कीर्ति रही छाई।
जय हनुमत..
जारि लंक सिय-सुधि ले आए, वानर हर्षाए,
कारज कठिन सुधारे, रघुबर मन भाए।
जय हनुमत..
शक्ति लगी लक्ष्मण को, भारी सोच भयो,
लाय संजीवन बूटी, दुःख सब दूर कियो।
जय हनुमत..
रामहिं ले अहिरावण, जब पाताल गयो,
ताही मारि प्रभु लाये, जय जयकार भयो।
जय हनुमत..
राजत मेहंदीपुर में, दर्शन सुखकारी,
मंगल और शनिश्चर, मेला है जारी।
जय हनुमत..
श्री बालाजी की आरती, जो कोइ नर गावे,
कहत इंद्र हर्षित मन, वांछित फल पावे।
जय हनुमत वीरा, स्वामी जय हनुमत वीरा,
संकट मोचन स्वामी, तुम हो रणधीरा।

***

Vishnu Aarti

विष्णु आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी, जय जगदीश हरे,
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे,
ॐ जय जगदीश हरे।
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का, स्वामी दुःख...
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का,
ॐ जय जगदीश हरे।
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी, स्वामी शरण...
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी,
ॐ जय जगदीश हरे।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी, स्वामी तुम...
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी,
ॐ जय जगदीश हरे।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन-कर्ता, स्वामी तुम...
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता,
ॐ जय जगदीश हरे।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति, स्वामी सबके...
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति,
ॐ जय जगदीश हरे।
दीनबन्धु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे, स्वामी तुम...
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे,
ॐ जय जगदीश हरे।
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा, स्वामी पाप...
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा,
ॐ जय जगदीश हरे।
श्री जगदीशजी की आरती, जो कोई नर गावे, स्वामी जो...
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख संपत्ति पावे,
ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी, जय जगदीश हरे,
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे।

***

Narshiha Aarti

नरसिंह आरती

जय नरसिंह हरे,प्रभु जय नरसिंह हरे,
स्तंभ फाड़ प्रभु प्रकटे,स्तंभ फाड़ प्रभु प्रकटे,
जन का ताप हरे। जय नरसिंह...
तुम हो दिन दयाला, भक्तन हितकारी,
प्रभु भक्तन हितकारी,
अद्‌भुत रूप बनाकर, अद्‌भुत रूप बनाकर,
प्रकटे भय हारी, जय नरसिंह...
सबके ह्रदय विदारण, दुस्यु जियो मारी,
प्रभु दुस्यु जियो मारी,
दास जान आपनायो, दास जान आपनायो,
जिन पर कृपा करी। जय नरसिंह...
ब्रह्मा करत आरती, माला पहिनावे,
प्रभु माला पहिनावे,
शिवजी जय जय कहकर, पुष्पन बरसावे।
जय नरसिंह हरे, प्रभु जय नरसिंह हरे।

***

Krishna Aarti

कृष्णा आरती

आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की
गले में बैजंती माला, बजावै मुरली मधुर बाला,
श्रवण में कुण्डल झलकाला, नंद के आँगन नंदलाला,
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली,
कि बन में ठाढ़े बनमाली,
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की,
भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक, चंद्र सी झलक,
ललित छवि श्यामा प्यारी की,
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की,
आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की।
कनकमय मोर मुकुट बिलसै, देवता दरसन को तरसैं,
गगन सों सुमन रासि बरसै,
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिन संग,
अतुल रति गोप कुमारी की,
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की,
आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की।
जहां ते प्रकट भई गंगा, कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा,
स्मरन ते होत मोह भंगा,
बसी सिव सीस, जटा के बीच, हरै अघ कीच,
चरन छवि श्रीबनवारी की,
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की,
आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की।
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृंदावन बेनू,
चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हंसत मृदु मंद,चांदनी चंद, कटत भव फंद,
टेर सुन दीन भिखारी की,
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की,
आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की।

***

Khatu Shyamji Aarti

खाटू श्यामजी आरती

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे,
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे।
ॐ जय श्री श्याम हरे...
रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर ढुरे,
तन केसरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े।
ॐ जय श्री श्याम हरे...
गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे,
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जले।
ॐ जय श्री श्याम हरे...
मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे,
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे।
ॐ जय श्री श्याम हरे...
झांझ कटोरा और घड़ियाल, शंख मृदंग धुरे,
भक्त आरती गावे, जय-जयकार करे।
ॐ जय श्री श्याम हरे...
जो ध्यावे फल पावे, सब दुःख से उबरे,
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम-श्याम उचरे।
ॐ जय श्री श्याम हरे...
श्री श्याम बिहारीजी की आरती, जो कोई नर गावे,
कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे।
ॐ जय श्री श्याम हरे...
तन मन धन सब कुछ है तेरा, हो बाबा सब कुछ है तेरा,
तेरा तुझको अर्पण, क्या लोग मेरा।
ॐ जय श्री श्याम हरे...
जय श्री श्याम हरे, बाबा जी श्री श्याम हरे,
निज भक्तों के तुमने, पूरण काज करे।
ॐ जय श्री श्याम हरे...

***

Shri Ram Aarti

रामचन्द्र आरती (1)

आरती कीजै रामचन्द्र जी की,
हरि-हरि दुष्टदलन सीतापति जी की।
पहली आरती पुष्पन की माला,
काली नाग नाथ लाए गोपाला।
दूसरी आरती देवकी नन्दन,
भक्त उबारन कंस निकन्दन।
तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे,
रत्न सिंहासन सीता रामजी सोहे।
चौथी आरती चहुं युग पूजा,
देव निरंजन स्वामी और न दूजा।
पांचवीं आरती राम को भावे,
रामजी का यश नामदेव जी गावें।

***

Ram Aarti - राम आरती(2)

श्री राम चंद्र कृपालु भजुमन हरण भव भय दारुणम्,
नवकंज लोचन कंज मुखकर, कंज पद कन्जारुणम्।
कंदर्प अगणित अमित छवी, नव नील नीरज सुन्दरम्,
पट्पीत मानहु तडित रूचि शुचि, नौमी जनक सुतावरम्।
भजु दीन बंधु, दिनेश दानव, दैत्य वंश निकंदनम्।
रघुनंद आनंद, कंद कौशल, चंद दशरथ नन्दनम्।
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु, उदारू अंग विभूषणं।
आजानु भुज शर चाप धर, संग्राम जित खर-दूषणम्।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष, मुनि मन रंजनम्।
मम ह्रदय कुंज निवास कुरु, कामादी खल दल गंजनम्।
मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुन्दर सांवरो।
करुना निधान सुजान शील सनेहु जानत रावरो।
ऐहि भांति गौरि अशीश सुनि सिये सहित हिये हर्षि अली।
तुलसि भवानिहि पुजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली।
जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरसु न जाहि कहि।
मन्जुल मंगल मूल बाम, अंग फ़रकन लगे।

***

Satnarayan Aarti

सत्यनारायण आरती

जय लक्ष्मीरमणा श्री जय लक्ष्मीरमणा,
सत्यनारायण स्वामी जनपातक हरणा।
जय लक्ष्मीरमणा...
रत्नजड़ित सिंहासन अद्भुत छवि राजे,
नारद करत निराजन घंटा ध्वनि बाजे।
जय लक्ष्मीरमणा...
प्रगट भये कलि कारण द्विज को दर्श दियो,
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर कंचन महल कियो।
जय लक्ष्मीरमणा...
दुर्बल भील कठारो इन पर कृपा करी,
चन्द्रचूड एक राजा जिनकी विपति हरी।
जय लक्ष्मीरमणा...
वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी,
सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर स्तुति कीनी।
जय लक्ष्मीरमणा...
भाव भक्ति के कारण छिन-छिन रूप धर्यो,
श्रद्धा धारण कीनी तिनको काज सर्यो।
जय लक्ष्मीरमणा...
ग्वाल बाल संग राजा वन में भक्ति करी,
मनवांछित फल दीनो दीनदयाल हरी।
जय लक्ष्मीरमणा...
चढ़त प्रसाद सवाया कदली फल मेवा,
धूप दीप तुलसी से राजी सत्यदेवा।
जय लक्ष्मीरमणा...
श्री सत्यनारायणजी की आरती जो कोई नर गावे,
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे।
जय लक्ष्मीरमणा श्री जय लक्ष्मीरमणा,
सत्यनारायण स्वामी जनपातक हरणा।

***

Sai baba Aarti

साईँ बाबा आरती

आरती श्री साईं गुरुवर की, परमानन्द सदा सुरवर की।
जाकी कृपा विपुल सुखकारी, दुःख, शोक, भयहारी।
शिरडी में अवतार रचाया, चमत्कार से तत्व दिखाया।
कितने भक्त चरण पर आये, वे सुख शांति चिरंतन पाये।
भावः चारे मन में जैसा, पावत अनुभव वो ही वैसा।
गुरु की लगावे तन को, समाधान लाभत उस मनको।
साईं नाम सदा जो गावे, सो फल जग में शाश्वत पावे।
गुरुबारसर करी पूजा सेवा, उस पर कृपा करत गुरुदेवा।
राम, कृष्ण, हनुमान रूप में, दे दर्शन जानत जो मन में।
विविध धर्म के सेवक आते, दर्शन से इच्छित फल पाते।
जय बोलो साईबाबा की, जय बोलो अवधुतगुरु की।
साईंदास आरती को गावे, घर में बसी सुख, मंगल पावे।

***

Jagdamba Aarti

जगदंबा आरती

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी,
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी।
जय अम्बे गौरी...
माँग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को,
उज्जवल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको।
जय अम्बे गौरी...
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै,
रक्तपुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै।
जय अम्बे गौरी...
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्परधारी,
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी।
जय अम्बे गौरी...
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती,
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति।
जय अम्बे गौरी...
शुम्भ-निशुम्भ बिदारे, महिषासुर घाती,
धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।
जय अम्बे गौरी...
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे,
मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।
जय अम्बे गौरी...
ब्रहमाणी रुद्राणी तुम कमला रानी,
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी।
जय अम्बे गौरी...
चौंसठ योगिनी मंगल गावत, नृत्य करत भैरूँ,
बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरु।
जय अम्बे गौरी...
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता,
भक्तन की दु:ख हरता, सुख सम्पत्ति करता।
जय अम्बे गौरी...
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी,
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी।
जय अम्बे गौरी...
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती,
श्रीमालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति।
जय अम्बे गौरी...
श्री अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावै,
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै।
जय अम्बे गौरी...

***

Durga Aarti

दुर्गा आरती

जगजननी जय जय, माँ जगजननी जय जय, भयहारिणी, भवतारिणी, भवभामिनि जय जय। जगजननी...
तू ही सत्-चित्-सुखमय, शुद्ध ब्रह्मरूपा, सत्य सनातन, सुन्दर पर-शिव सुर-भूपा। जगजननी...
आदि अनादि, अनामय, अविचल, अविनाशी, अमल, अनन्त, अगोचर, अज आनन्दराशी। जगजननी...
अविकारी, अघहारी, अकल कलाधारी, कर्ता विधि, भर्ता हरि, हर संहारकारी। जगजननी...
तू विधिवधू, रमा, तू उमा महामाया, मूल प्रकृति, विद्या तू, तू जननी जाया। जगजननी...
राम, कृष्ण तू, सीता, ब्रजरानी राधा, तू वांछा कल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा। जगजननी...
दश विद्या, नव दुर्गा नाना शस्त्रकरा, अष्टमातृका, योगिनि, नव-नव रूप धरा। जगजननी...
तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू, तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू। जगजननी...
सुर-मुनि मोहिनि सौम्या, तू शोभाधारा, विवसन विकट सरुपा, प्रलयमयी, धारा। जगजननी...
तू ही स्नेहसुधामयी, तू अति गरलमना, रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि तना। जगजननी...
मूलाधार निवासिनि, इह-पर सिद्धिप्रदे, कालातीता काली, कमला तू वरदे। जगजननी...
शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी, भेद प्रदर्शिनि वाणी विमले वेदत्रयी। जगजननी...
हम अति दीन दु:खी माँ विपत जाल घेरे, हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे। जगजननी...
निज स्वभाववश जननी दयादृष्टि कीजै, करुणा कर करुणामयी चरण शरण दीजै।
जगजननी जय जय, माँ जगजननी जय जय, भयहारिणी, भवतारिणी, भवभामिनि जय जय।

***

Vaishno Devi Aarti

वैष्णो देवी आरती

जय वैष्णवी माता, मैया जय वैष्णवी माता,
हाथ जोड़ तेरे आगे, आरती मैं गाता।
शीश पे छत्र विराजे, मूरतिया प्यारी,
गंगा बहती चरनन, ज्योति जगे न्यारी।
ब्रह्मा वेद पढ़े नित द्वारे, शंकर ध्यान धरे,
सेवक चंवर डुलावत, नारद नृत्य करे।
सुंदर गुफा तुम्हारी, मन को अति भावे,
बार-बार देखन को, ऐ माँ मन चावे।
भवन पे झण्डे झूलें, घंटा ध्वनि बाजे,
ऊँचा पर्वत तेरा, माता प्रिय लागे।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, भेंट पुष्प मेवा,
दास खड़े चरणों में, दर्शन दो देवा।
जो जन निश्चय करके, द्वार तेरे आवे,
उसकी इच्छा पूरण, माता हो जावे।
इतनी स्तुति निश-दिन, जो नर भी गावे,
कहते सेवक ध्यानू, सुख सम्पत्ति पावे।

***

Kaali Mata Aarti

काली आरती

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट करे।
सुन जगदम्बा कर न विलम्बा, संतन के भण्डार भरे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जय काली कल्याण करे।
बुद्वि -विधाता तू जग माता, मेरा कारज सिद्व करे।
चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन परे।
जब जब भीड़ पड़े भक्तन पर, तब तब आय सहाय करे।
बार -बार ते सब जग मोहयो, तरूणी रूप अनूप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावे, भार्या होकर भोग करे।
संतन सुखदाई सदा सहाई, संत खड़े जयकार करे।
ब्रह्मा विष्णु महेश फल लिए, भेंट देन तेरे द्वार खड़े।
अटल सिंहासन बैठी माता, सिर सोने का छत्र फिरे।
बार शनिचर कुम कुम बरणी, जब लांगुर पर हुक्म करे।
खड़क खप्पर त्रिशूल हाथ लिए, रक्तबीज को भस्म करे।
शुम्भ निशुम्भ पछाड़े माता, महिषासुर को पकड़ दले।
कुपित हो कर दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूर करे।
आदित बार आदि का राजत, अपने जन का कष्ट हरे।
जब तुम देखो दया रूप हो, पल में संकट दूर करे।
सौम्य स्वभाव धरो मेरी माता, जन की अरज कुबूल करे।
सिहं पीठ पर चढ़ी भवानी, अटल भुवन में राज करे।
दर्शन पावें मंगल गावें, सिद्ध साधक तेरी भेंट धरें।
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे, शिव शंकर हरी ध्यान धरे।
इन्द्र कृष्ण तेरी करे आरती, चँवर कुबेर डुलाय रहे।
जय जननी जय मातु भवानी, अटल भवन में राज करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जय काली कल्याण करे।
मंगल की सेवा सुन मेरी देवा, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट करे।

***

Lakshmi Aarti

लक्ष्मी आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता,
तुमको निशिदिन सेवत, हरि विष्णु धाता।
ॐ जय लक्ष्मी माता...
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता,
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।
ॐ जय लक्ष्मी माता...
दुर्गा रुप निरंजनी, सुख सम्पत्ति दाता,
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता।
ॐ जय लक्ष्मी माता...
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता,
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता।
ॐ जय लक्ष्मी माता...
जिस घर में तुम रहतीं, सब सदगुण आता,
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता।
ॐ जय लक्ष्मी माता...
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता,
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता।
ॐ जय लक्ष्मी माता...
शुभ-गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता,
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता।
ॐ जय लक्ष्मी माता...
महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई जन गाता,
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता।
ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता,
तुमको निशिदिन सेवत, हरि विष्णु धाता।

***

Saraswati Aarti

सरस्वती आरती

जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता,
सदगुण वैभव शालिनी, त्रिभुवन विख्याता।
जय सरस्वती माता...
चन्द्रवदनि पद्मासिनि, द्युति मंगलकारी,
सोहे शुभ हंस सवारी, अतुल तेजधारी।
जय सरस्वती माता...
बाएं कर में वीणा, दाएं कर माला,
शीश मुकुट मणि सोहे, गल मोतियन माला।
जय सरस्वती माता...
देवी शरण जो आए, उनका उद्धार किया,
पैठी मंथरा दासी, रावण संहार किया।
जय सरस्वती माता...
विद्या ज्ञान प्रदायिनि, ज्ञान प्रकाश भरो,
मोह अज्ञान और तिमिर का, जग से नाश करो।
जय सरस्वती माता...
धूप दीप फल मेवा, माँ स्वीकार करो,
ज्ञानचक्षु दे माता, जग निस्तार करो।
जय सरस्वती माता...
माँ सरस्वती की आरती, जो कोई जन गावे,
हितकारी सुखकारी ज्ञान भक्ति पावे।
जय सरस्वती माता...
जय सरस्वती माता, जय जय सरस्वती माता,
सदगुण वैभव शालिनी, त्रिभुवन विख्याता।
जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता,
सदगुण वैभव शालिनी, त्रिभुवन विख्याता।

***

Gaytri Aarti

गायत्री आरती

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता,
आदि शक्ति तुम, अलख निरंजन जग पालन कर्त्री,
दुःख शोक भय, क्लेश कलह दारिद्र्य दैन्य हर्त्री।
ब्रह्मरूपिणी, प्रणत पालिनी, जगत धातृ अम्बे,
भव भय हारी, जन हितकारी, सुखदा जगदम्बे।
भयहारिणि, भवतारिणि, अनघे अज आनन्द राशी,
अविकारी, अघहरी, अविचलित, अमले, अविनाशी।
कामधेनु सत चित आनन्दा जय गंगा गीता,
सविता की शाश्वती, शक्ति तुम सावित्री, सीता।
ऋग्, यजु, साम, अथर्व, प्रणयिनी, प्रणव महामहिमे,
कुण्डलिनी, सहस्रार, सुषुम्रा, शोभा गुण गरिमे।
स्वाहा, स्वधा, शची, ब्रह्माणी, राधा, रुद्राणी,
जय सतरूपा वाणी, विद्या, कमला, कल्याणी।
जननी हम हैं दीन, हीन, दुःख दारिद्र के घेरे,
यदपि कुटिल, कपटी कपूत तो भी बालक हैं तेरे।
स्नेह सनी, करुणामयि माता, चरण शरण दीजै,
बिलख रहे हम शिशु सुत तेरे, दया दृष्टि कीजै।
काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ, दुर्भाव द्वेष हरिये,
शुद्ध, बुद्धि, निष्पाप हृदय, मन को पवित्र करिये।
तुम समर्थ, सब भाँति तारिणी, तुष्टि, पुष्टि त्राता,
सत मार्ग पर हमें चलाओ, जो है सुखदाता।
जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।

***

Parvati Aarti

पार्वती आरती

जय पार्वती माता, जय पार्वती माता,
ब्रह्म सनातन देवी, शुभ फल दाता।
जय पार्वती...
अरिकुल पद्मा विनासनी, जय सेवक त्राता,
जग जीवन जगदम्बा, हरिहर गुण गाता।
जय पार्वती...
सिंह को वाहन साजे, कुंडल है साथा,
देव वधु जहं गावत, नृत्य कर ताथा।
जय पार्वती...
सतयुग शील सुसुन्दर, नाम सती कहलाता,
हेमांचल घर जन्मी, सखियन रंगराता।
जय पार्वती...
शुम्भ निशुम्भ विदारे, हेमांचल स्याता,
सहस भुजा तनु धरिके, चक्र लियो हाथा।
जय पार्वती...
सृष्टि रूप तुही जननी, शिव संग रंगराता,
नंदी भृंगी बीन, लाही सारा मदमाता।
जय पार्वती...
देवन अरज करत हम, चित को लाता,
गावत दे दे ताली, मन में रंगराता।
जय पार्वती...
श्री आरती पार्वती मैया की, जो कोई गाता,
सदा सुखी रहता, सुख संपति पाता।
जय पार्वती माता, जय पार्वती माता,
ब्रह्म सनातन देवी, शुभ फल दाता।

***

Vindveshwari Devi Aarti

विन्ध्येश्वरीदेवी आरती

सुन मेरी देवी पर्वतवासिनि, तेरा पार न पाया,
पान सुपारी ध्वजा नारियल, लेतेरी भेंट चढ़ाया।
सुन मेरी देवी...
सुवा चोली तेरे अंग विराजै, केसर तिलक लगाया।
सुन मेरी देवी...
नंगे पग अकबर आया, सोने का छत्र चढ़ाया।
सुन मेरी देवी...
ऊंचे पर्वत भयो देवालय, नीचे शहर बसाया।
सुन मेरी देवी...
सतयुग, त्रेता द्वापर मध्ये, कलियुग राज सवाया।
सुन मेरी देवी...
धूप दीप नैवेघ आरती, मोहन भोग लगाया।
सुन मेरी देवी...
ध्यानू भगत मैया तेरे गुण गावै, मनवांछित फल पावैं।
सुन मेरी देवी...

***

Ganga Aarti

गंगा आरती

ॐ जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता,
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता।
ॐ जय गंगे माता...
चन्द्र-सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता,
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता।
ॐ जय गंगे माता...
पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता,
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता।
ॐ जय गंगे माता...
एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता,
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता।
ॐ जय गंगे माता...
आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता,
सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता।
ॐ जय गंगे माता...

***

Tulsi Aarti

तुलसी आरती

तुलसी महारानी नमो नमो, हरी की पटरानी नमो नमो।
धन तुलसी पूरण तप कीनो, शालिग्राम बनी पटरानी
जाके पत्र मंजर कोमल, श्रीपति कमल चरण लपटानी।
धुप दीप नैवेद्य आरती, पुष्पन की वर्षा बरसानी।
छप्पन भोग छत्तीसो व्यंजन, बिन तुलसी हरी एक ना मानी
सभी सखी मैया तेरो यश गावे, भक्तिदान दीजै महारानी।

***

Surya Aarti

सूर्य आरती

जय कश्यप नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन,
त्रिभुवन तिमिर निकन्दन, भक्त हृदय चन्दन।
जय कश्यप...
सप्त अश्वरथ राजित, एक चक्रधारी,
दु:खहारी, सुखकारी, मानस मलहारी।
जय कश्यप...
सुर मुनि भूसुर वन्दित, विमल विभवशाली,
अघ दल दलन दिवाकर, दिव्य किरण माली।
जय कश्यप...
सकल सुकर्म प्रसविता, सविता शुभकारी,
विश्व विलोचन मोचन, भवबन्धन भारी।
जय कश्यप...
कमल समूह विकासक, नाशक त्रय तापा,
सेवत साहज हरत अति मनसिज संतापा।
जय कश्यप...
नेत्र व्याधि हर सुरवर, भू पीड़ाहारी,
वृष्टि विमोचन संतत, परहित व्रतधारी।
जय कश्यप...
सूर्यदेव करुणाकर, अब करुणा कीजै,
हर अज्ञान मोह सब, तत्त्वज्ञान दीजै।
जय कश्यप नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन,
त्रिभुवन तिमिर निकन्दन, भक्त हृदय चन्दन।

***

Shanidev Aarti

शनिदेव आरती

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी,
सूर्य पुत्र प्रभु छाया महतारी।
श्याम अंग वक्र-दृष्टि चतुर्भुजा धारी,
नीलाम्बर धार नाथ गज की असवारी।
क्रीट मुकुट शीश राजित दिपत है लिलारी,
मुक्तन की माला गले शोभित बलिहारी।
मोदक मिष्ठान पान चढ़त हैं सुपारी,
लोहा तिल तेल उड़द महिषी अति प्यारी।
देव दनुज ऋषि मुनि सुमिरत नर नारी,
विश्वनाथ धरत ध्यान शरण हैं तुम्हारी।
जय जय श्री शनि देव भक्तन हितकारी,
सूर्य पुत्र प्रभु छाया महतारी।

***

Aadinath Bhagwan Aarti

आदिनाथ भगवान आरती

आरती उतारूँ आदिनाथ भगवान की,
माता मरुदेवि पिता नाभिराय लाल की,
रोम रोम पुलकित होता देख मूरत आपकी,
आरती उतारूँ आदिनाथ भगवान की।
प्रभुजी हम सब उतारें थारी आरती,
तुम धर्म धुरन्धर धारी, तुम ऋषभ प्रभु अवतारी,
तुम तीन लोक के स्वामी, तुम गुण अनंत सुखकारी,
इस युग के प्रथम विधाता, तुम मोक्ष मर्म के दाता,
जो शरण तुम्हारी आता, वो भव सागर तीर जाता,
हैं नाम हैं हजारों ही गुण गान की,
तुम ज्ञान की ज्योति जमाए, तुम शिव मार्ग बतलाए,
तुम आठो कर्म नशाए, तुम सिद्ध परम पद पाये,
मैं मंगल दीप सजाऊँ, मैं जगमग ज्योति जलाऊँ,
मैं तुम चरणों में आऊँ, मैं भक्ति में रम जाऊँ,
मैं झूम झूम झूम नाचूँ करुँ आरती, आरती उतारूँ...

***

Parasvanath Aarti

पार्श्वनाथ भगवान आरती (1)

मैं तो आरती ऊतारूँ रे, पारस प्रभुजी की,
जय-जय पारस प्रभु जय - जय नाथ।
बड़ी ममता माया दुलार प्रभुजी चरणों में,
बड़ी करुणा है, बड़ा प्यार प्रभुजी की आँखों में,
गीत गाऊँ झूम-झूम, झम-झमा झम झूम-झूम,
भक्ति निहारूँ रे, ओ प्यारा-प्यारा जीवन सुधारूँ रे।
मैं तो आरती ऊतारूँ रे, पारस प्रभुजी की,
सदा होती है जय जयकार प्रभुजी के मंदिर में...
नित साजों की हो झंकार प्रभुजी के मंदिर में।
नृत्य करूँ, गीत गाऊँ, प्रेम सहित भक्ति करूँ,
कर्म जलाऊँ रे, ओ मैं तो कर्म जलाऊँ रे।
मैं तो आरती ऊतारूँ रे, पारस प्रभुजी की।

***

Parasvanath Aarti

पार्श्वनाथ भगवान आरती (2)

जय जय आरती पार्श्व जिनन्दा, अश्वसेन वामाजी के नंदा,
नील वरण कंचनमय काया, नाग नागिन प्रभुदर्श सुहाया,
ध्यावे नित नित होते आनन्दा...
समवसरण प्रबु आप बिराजे तीनो लोक में दुंदुभी बाजे,
देश बनारस के सुखकंदा, ध्यावे नित नित होते आनन्दा...
कमठ काष्ट के ढेर जलाए, प्रभुजी जलते नाग बचाए,
नाग वो जन्मे पद धरणेन्द्रा, ध्यावे नित नित होते आनन्दा...
मेघमाली धन जल बरसावे, नासाग्रे प्रभु डूबन आवे,
पद्मावती प्रभु चरण ऊंचावे, मेघमाली समकित ले अभिनंदा,
रत्नों भरी आरती उजवावे, धरणेन्द्र पद्मावती आरती गावे,
इन्द्र इन्द्राणीयां हर्ष भरन्दा, ध्यावे नित नित होते आनन्दा...
चिंतामणीजी की आरती गावे, सो नर नारी अमर पद पावे,
आत्मा निर्मल शुद्ध करन्दा, ध्यावे नित नित होते आनन्दा...

***

Mahaveer Swami Aarti

महावीर स्वामी आरती (1)

ऊं जय महावीर प्रभो, स्वामी जय महावीर प्रभो,
जग-नायक सुखदायक , अति गंभीर प्रभो।
ऊं जय महावीर प्रभो...
कुण्डलपुर में जन्में त्रिशला के जाए,
पिता सिद्धार्थ राजा, सुर नर हर्षाए|
ऊं जय महावीर प्रभो...
दीनानाथ दयानिधि हो मंगलकारी, स्वामी हो मंगलकारी,
जगतहित संयम धारा, प्रभु पर उपकारी|
ऊं जय महावीर प्रभो...
पापाचार मिटाया, सत्पथ दिखलाया,
दया धर्म का झंडा, जग में लहराया|
ऊं जय महावीर प्रभो...
अर्जुनमाली, गौतम, श्री चन्दनबाला,
पार जगत से बेडा, इनका कर डाला|
ऊं जय महावीर प्रभो...
पावन नाम तुम्हारा, जग तारणहारा,
निश दिन जो नर ध्यावे, कष्ट मिटे सारा|
ऊं जय महावीर प्रभो...
करूणासागर, तेरी महिमा है न्यारी,
ज्ञान मुनि गुण गावे, चरणन बलिहारी|
ऊं जय महावीर प्रभो, स्वामी जय महावीर प्रभो,
जग-नायक सुखदायक , अति गंभीर प्रभो।

***

Mahaveer Swami Aarti

महावीर स्वामी आरती (2)

जय सन्मति देवा, प्रभु जय सन्मति देवा,
वर्द्धमान महावीर वीर अति, जय संकट छेवा।
ऊँ जय सन्मति देवा...
सिद्धार्थ नृप नन्द दुलारे, त्रिशला के जाये,
कुण्डलपुर अवतार लिया, प्रभु सुर नर हर्षाये।
ऊँ जय सन्मति देवा...
देव इन्द्र जन्माभिषेक कर, उर आनंद भरिया,
रुप आपका लख नहिं पाये, सहस आंख धरिया।
ऊँ जय सन्मति देवा...
जल में भिन्न कमल ज्यों रहिये, घर में बाल यती,
राजपाट ऐश्वर्य छोड़ सब, ममता मोह हती।
ऊँ जय सन्मति देवा...
बारह वर्ष छद्मावस्था में, आतम ध्यान किया,
घाति-कर्म चूर-चूर, प्रभु केवल ज्ञान लिया।
ऊँ जय सन्मति देवा...
पावापुर के बीच सरोवर, आकर योग कसे,
हने अघातिया कर्म शत्रु सब, शिवपुर जाय बसे।
ऊँ जय सन्मति देवा...
भूमंडल के चांदनपुर में, मंदिर मध्य लसे,
शान्त जिनेश्वर मूर्ति आपकी, दर्शन पाप नसे।
ऊँ जय सन्मति देवा...
करुणासागर करुणा कीजे, आकर शरण गही,
दीन दयाला जगप्रतिपाला, आनन्द भरण तु ही।
जय सन्मति देवा, प्रभु जय सन्मति देवा,
वर्द्धमान महावीर वीर अति, जय संकट छेवा।

***

Mahaveer Swami Aarti

महावीर स्वामी आरती (3)

ॐ जय महावीर प्रभु, स्वामी जय महावीर प्रभु,
कुंडलपुर अवतारी, त्रिशलानंद विभो,
ॐ जय महावीर...
सिद्धार्थ घर जन्में, वैभव था भारी, स्वामी वैभव था भारी,
बाल ब्रह्मचारी व्रत, पाल्यो तपधारी,
ॐ जय महावीर...
आतम ज्ञान विरागी, समदृष्टि धारी,
माया मोह विनाशक, ज्ञान ज्योति धारी,
ॐ जय महावीर...
जग में पाठ अहिंसा, आप ही विस्तारयो,
हिंसा पाप मिटा कार, सुधर्म परिचारयो,
ॐ जय महावीर...
यही विधि चाँदनपुर में, अतिशय दर्शायो,
ग्वाल मनोरथ पूरयो, दूध गाय पायो,
ॐ जय महावीर...
प्राणदान मंत्री को, तुमने प्रभु दीना,
मंदिर तीन शिखर का, निर्मित है कीना,
ॐ जय महावीर...
जयपुर नृप भी तेरे, अतिशय के सेवी,
एक ग्राम तिन दीनों, सेवा हित यह भी,
ॐ जय महावीर...
जो कोई तेरे दर पर, इच्छा कर जावे,
धन, सुत सब कुछ पावै, संकट मिट जावै,
ॐ जय महावीर...
निश दिन प्रभु मंदिर में, जगमग ज्योति जले,
हरि प्रसाद चरणों में, आनंद मोद भरै,
ॐ जय महावीर प्रभु, स्वामी जय महावीर प्रभु,
कुंडलपुर अवतारी, त्रिशलानंद विभो.

***

Padmavati Mata Aarti

पद्मावती माता आरती

मैं तो आरती उतारूँ रे, पद्मावती माता की,
जय जय माँ पद्मावती, जय जय माँ।
सदा होती है जयजयकार, माँ के मंदिर में,
लागी भक्तन की भीड़ अपार, माँ के मंदिर में,
पुष्प लाओ, धूप जलाओ, स्वर्णमयी दीप लाओ,
आरती उतारो रे, हो सब मिल आरती उतारो रे।
मैं तो आरती उतारूँ रे...
पाश्व प्रभुवर की शासन देवी, सब संकट हरणी,
देव धरणेन्द्र की यक्षिणी, तुम मंगल करणी,
भक्त जब पुकारते, संकट को तारती,
महिमा को गाएं तेरी, हो सब मिल महिमा को गावें तेरी।
मैं तो आरती उतारूँ रे...
पाश्व प्रभुवर के मुख से जब मंत्र नवकार सुना,
बनें पद्मावती धरणेन्द्र, उपसर्ग दूर किया,
स्थल वह अहिच्छत्र, तब से है जग प्रसिद्ध,
पावन परम पूज्य है, हो देखो वो पावन परम पूज्य है।
मैं तो आरती उतारूँ रे...
रोग, शोक, दरिद्र, नाशें, प्रेतादि की बाधा,
धन-संपत्ति सुत देकर, पूरी करें वाञ्छा,
सुन ले आज फिर पुकार, भक्त खड़े तेरे द्वार,
अतुल शक्ति की धारिणी, हो तुम हो अतुल शक्ति की धारिणी।
मैं तो आरती उतारूँ रे...
माँ सहस्रनाम से तेरी, करते जो आराधना,
गोदी भरते जो माँ तेरी, पूरी हों सब कामना,
ममतामयी मेरी मात, मैं करू एक आश,
जीवन प्रकाशमान हो, माँ मेरा भी जीवन प्रकाशमान हो।
मैं तो आरती उतारूँ रे, पद्मावती माता की,
जय जय माँ पद्मावती, जय जय माँ।

***

Nakoda Bhairav Aarti

नाकोडा भैरव आरती

ॐ जय जय जयकारा, वारी जय जय झंकारा,
आरती उतारो भविजन मिलकर, भैरव रखवाला,
वारी जीवन रखवाला ॐ जय जय जयकारा।
तुं समकित सुरनर मन मोहक, मंगल नितकारा,
श्री नाकोडा भैरव सुंदर, जन मन हरनारा।
ॐ जय जय...
खडग त्रिशुल धर खप्पर सोहे, डमरु कर धारा,
अदभुत रुप अनोखी रचना, मुकुट कुंडल सारा।
ॐ जय जय...
ॐ ह्रीँ क्षाँ क्षः मंत्रबीज युत, नाम जपे ताहरा,
रिद्धि सिद्धि अरु सम्पद मनोहर, जीवन सुखकारा।
ॐ जय जय...
कुशल कर तेरा नाम लिया नित, आनन्द करनारा,
रोग शोक दुःख दारिद्र हरता, वांछित दातारा।
ॐ जय जय...
श्रीफल लापसी मातर सुखडी, लड्डु तेलधारा,
धुप दीप फूल माल आरती, नित नये रविवारा।
ॐ जय जय...
वैयावच्च करता संघ तेरी, ध्यान अडग धारा,
हिंमत हित से चित में धरता, भव्यानंद प्यारा।
ॐ जय जय...
दो हजारके शुभ संवत्सर, पोष मास रसाला,
श्री संघ मिलकर करे आरती, मंगल शिव माला।
ॐ जय जय जयकारा, वारी जय जय झंकारा,
आरती उतारो भविजन मिलकर, भैरव रखवाला,
वारी जीवन रखवाला ॐ जय जय जयकारा।

***

Panch Parmeshthi Aarti

श्री पंच परमेष्टि प्रभु आरती

यह विधि मंगल आरती की जय,
पंच परम पद भज सुख लीजे,
पहेली आरती श्री जिनराजा,
भव दधि पार उतर जिहाजा
यह विधि मंगल आरती की जय,
पंच परम पद भज सुख लीजे,
दूसरी आरती सिद्धन केरी,
सुमरण करत मिटे भव फेरी।
यह विधि मंगल आरती की जय,
पंच परम पद भज सुख लीजे,
तीजी आरती सूर मुनिंदा,
जनम मरन दुःख दूर करिंदा।
यह विधि मंगल आरती की जय,
पंच परम पद भज सुख लीजे,
चोथी आरती श्री उवझाया,
दर्शन देखत पाप पलाया।
यह विधि मंगल आरती की जय,
पंच परम पद भज सुख लीजे,
पाचवी आरती साधू तिहारी,
कुमति विनाशक शिव अधिकारी।
यह विधि मंगल आरती की जय,
पंच परम पद भज सुख लीजे,
छट्टी ग्यारह प्रतिमा धारी,
श्रावक वंदो आनद करी।
यह विधि मंगल आरती की जय,
पंच परम पद भज सुख लीजे,
सातवी आरती श्री जिनवाणी,
ज्ञानत सुरग मुक्ति सुखदानी।
यह विधि मंगल आरती की जय,
पंच परम पद भज सुख लीजे,
आठवी आरती श्री बाहुबली स्वामी,
करी तपस्या हुए मोक्ष गामी।
यह विधि मंगल आरती की जय,
पंच परम पद भज सुख लीजे,
जो यह आरती करे करावे,
सौ नर मन वांछित फल पावे।
यह विधि मंगल आरती की जय,
पंच परम पद भज सुख लीजे,
सोने का दीप कपूर की बाती,
जगमग ज्योति जले सारी राती।
यह विधि मंगल आरती की जय,
पंच परम पद भज सुख लीजे,
संध्या कर के आरती की जे,

अपनों जनम सफल कर लीजे।
यह विधि मंगल आरती की जय,
पंच परम पद भज सुख लीजे।

***

Shri Rajendra Suri Aarti

श्री राजेन्द्र सूरी आरती

ॐ जय जय गुरुदेवा, स्वामी जय जय गुरुदेवा।
सुरि राजेन्द्र की आरती, कर पा शिव मेवा।
छत्तीस गुण के धारक, तारक उपकारी।
शत्रु मित्र सम जाने, बाल ब्रह्मचारी।
धन्य पिता ऋषभाजी, केशर महतारी।
धन्य भरतपुर नगरी, जन्मे गुणधारी।
मिथ्या तिमिर विनाशक, चिंतामणि जेवा।
मनवांछित फलदाता, करिये गुरु सेवा।
हुए समधित गुरुवर, श्री मोहनखेड़ा।
करुँ भक्ति तन मन से, पार करो बेड़ा।
पूज्य यतीन्द्र कृपा से, पूरण हुई आशा।
कुंदन वंदन कर ले, कटे करम पाशा।
ॐ जय जय गुरुदेवा, स्वामी जय जय गुरुदेवा।
सुरि राजेन्द्र की आरती, कर पा शिव मेवा।

***

Jin Kushal Suri Aarti

जिन कुशल सूरी आरती

जय जय गुरुदेवा, आरती मंगल मेवा।
आनंद सुख लेवा, जय जय गुरुदेवा।
जय जय गुरुदेवा, आरती मंगल मेवा।
आनंद सुख लेवा, जय जय गुरुदेवा।
एक व्रत, दोय व्रत, तीन चार व्रत,
पंचम व्रत सोहे।
भाविक जीव निस्तारण, सुरनर मन मोहे।
दु:ख दोहग सब हर कर, सद् गुरु राजन प्रतिबोधे।
सुत लक्ष्मी वर देकर, श्रावक कुल सोधे।
विध्या पुस्तक धरकर सद गुरु, मुगल पूत तारें।
बस कर जगन चौषठ,पाँच पीर सारे।
बीज पढंती वारी सदगुरु, समुद्र जहाज तारी।
वीर किया वश बावन, प्रगटे अवतारी।
जिनदत्त जिनचन्द्र कुशल सुरिश्वर,
खरतरगच्छ राजा।
चोरासी गच्छ पूजे मनवांछित ताजा।
मन शुद्ध आरती कष्ट निवारण,
सद गुरु की कीजे।
जो मांगे सो पावे, जग मे यश लीजे।
विक्रमपुर मे भक्त तुम्हारों, मंत्र कलाधारी।
नित उठ ध्यान लगावत,
मनवांछित फल पावत।
राम ऋद्धि सारी।
जय जय गुरुदेवा, आरती मंगल मेवा।
आनंद सुख लेवा, जय जय गुरुदेवा।

***

Jin Aarti

जिन आरती

जय जय आरती आदि जिणंदा,
जय जय आरती आदि जिणंदा,
जय जय आरती आदि जिणंदा,
नाभिराया मरुदेवी को नंदा।
पहली आरती पूजा कीजे,
नरभव पामीने लाहो लीजे।
दुसरी आरती दीन दयाला,
धुळेवा मंडपमां जग अजवाळा।
तीसरी आरती त्रिभुवन देवा,
सुरनर इन्द्र करे तोरी सेवा।
चोथी आरती चउगति चुरे,
मनवांछित फल शिवसुख पुरे।
पंचमी आरती पुन्य उपाया,
मूळचन्दे ऋषभ गुण गाया।

***

Mangal Dipak Aarti

मंगल दीपक

दीवो रे दीवो प्रभु मंगलिक दीवो,
आरती उतारण बहु चिरंजीवो।
सोहामणुं घेर पर्व दीवाळी,
अम्बर खेले अमरा बाळी।
दीपाळ भणे एणे कुल अजुआळी,
भावे भगते विघन निवारी।
दीपाळ भणे एणे ए कलिकाळे,
आरती उतारी राजा कुमारपाळे।
अम घेर मंगलिक तुम घेर मंगलिक,
मंगलिक चतुर्विध संघने होजो।

***

THE END

Get More

Aarti and Stotras at

astrologyfutureeye.com

****